International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.1 Sept – Oct 2022

भारतीय शिक्षा एवं साहित्य: वैश्विक संदर्भ में

Dr. Shobha.L
Associate Professor Department of Indian Languages M.S Ramaiah College of Arts, Science and Commerce Bengaluru-54
Corresponding Author- **Dr. Shobha.L**
Email id: shobhamsrcac@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7266782

भूमिका:-

- शिक्षा व्यक्ति से समाज को और समाज से राष्ट को हर तरह से शक्ति प्रदान करती है।
- शिक्षा मनुष्य को मानव से मनुष्य और मनुष्य से देवता बनाती है।
- साहित्य मानव मुक्ति का साधन है।
- भारत का साहित्य एक है।
- भारत का साहित्य एक है,यद्यपि यह बहुत सी भाषाओं में लिखा जाता है।-डां.एस.राधाकृष्णन।
- काव्य और कथा का रूप एक ही है।
- भारतीय भाषाएं और साहित्य एक ही वृक्ष की शाखाएं हैं।
- ज्ञान मनुष्य को दृष्टि देती है और संस्कृति उसको सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है।
- संस्कृत संस्कार की और संस्कृति की भाषा है।

शिक्षा और साहित्य प्राचीन तथा समकालीन स्पृणीय मूल्यों का संवाहक है।वास्तव में शिक्षा और साहित्य में परस्पर गहरा संबंध है।माध्यम भाषा हैं।भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है।भाषा शिक्षा के लिए अनिवार्य है और इसके बिना साहित्य संभव नहीं है,ज्ञान की वृद्दि भी भाषा के बिना अकल्पनीय है। भाषा के माध्यम से ही मूल्यों का संवर्धन और संक्रमण कर सकते हैं।

भाषा अभिव्यक्ति का प्रबल माध्यम है।

प्राकृत भाषाएं संस्कृत की ही कन्याएं हैं। तमिल,मलयालम,कन्नड और तेलुगु ये द्रविड भाषाएं मानी जाती हैं फिर भी उनके विकास में संस्कृत का बडा योगदान है।मराठी,गुजराती,पंजाबी,बांग्ला,हिंदी आदी भाषाएं संस्कृत से ही पल्लवित हुई है। हिन्दी अन्य आधुनिक भाषाओं की तरह प्रादेशिक होते हुए भी राष्टीय है और हमारी राष्टवाणी भी है।हिन्दी भाषा का भविष्य उज्वल है,उसे इंग्लिश,फ्रेंच,जर्मन,रूसी और चीनी भाषा के समान अंतरराष्टीय दर्जा भी मिला है।इस देश की सांस्कृतिक एकता और राष्टीयता प्राचीन काल सेआज तक निरंतर कायम रखने में भारतीय भाषाओं का सार्थक प्रयास जारी है। भाषा बहती है इसलिए बदलती है।इतिहास कब और किस प्रकार से नया मोड लेगा इसे सुनिश्चित रूप से कहना मुश्किल है।

मनुष्य ने अपने अनुभवों, भावनाओं और मूल्यों के आधार पर संस्कृति का नुर्माण किया है। भारतीय संस्कृती की जडें संस्कृत भाषा और साहित्य में हैं।पं.जवाहरलाल नेहरू ने संस्कृति की व्याख्या इस प्रकार करते हैं कि : संस्कृत ने ही भारतीय संस्कृति को जन्म दिया है। मानव का इतिहास ही उसकी सभ्यता और संस्कृति की कहानी है। इस देश की सांस्कृतिक विरासत वेदों,उपनिषदों,गीता,रामायण,महाभारत,संत साहित्य आदि स्रोतों से आती है। हमारी पौराणिक कथाएं एक हैं मिथक एक हैं,देवता भी एक ही हैं।राम,कृष्ण,बुद्ध,महावीर,अशोक,शिवाजी,गांधी अन्य कई हमारे महापुरुष है। हमारी लोक कथा,लोकगीत एक है। हमारी प्रेरणाएं एक है। समस्त भारत के संत समुदाय के गीत,काव्यों में इस देश की आत्मा का प्रकटीकरण हो चुका है। हमारे मूल्य एक है।संस्कृति ने ही हमारी भाषाओं और साहित्य में भावनात्मक एकता का निर्माण करती है।

भारत की शिक्षा पद्दती:-

भारतीय शिक्षा पद्दती संसार में सबसे प्राचीन पद्दती है।भारत में शिक्षा गुरुकुल में हुआ करता था,जो आज का रेसिडेंशियल या आवासी विद्यालय की तरह जिसे राजाश्र भी प्राप्त था।गुरुकुल शिक्षा पद्दति में आचार्य और छात्र गुरुमाता उस परिवार के प्रमुख सदस्य होते हैं। वह वैदिक शिक्षा पद्दति है,वेदों के अध्ययन पर आधारित है। परा और अपरा विद्या का अध्ययन-अध्यापन प्राचीन गुरुकुलों में होता था।विद्या परा हो या अपरा वह पवित्र होता है।वेदों में शाश्वत और सार्वभौम है।वेद का अर्थ ही ज्ञान है। आध्यात्मिक और भौतिक जीवन का सुंदर संगम गुरुकुल पद्दति में था। शिक्षा का माध्यम संस्कृत था। गणित,व्याकरण,खगोल,न्याय,काव्य-

विषय,धर्म,अर्थ,काम और मोक्ष,पुरुषार्थ (ब्रह्मचर्य,गृहस्त,वानप्रस्त और सन्यासाश्रम) इन विषयों पर विशेष रूप से अध्ययन किया जाता था। गुरू सर्वज्ञ माना जाता था।

गुरुकुल पद्दति क्रमश: खंडित हो गई ,बौद्दकाल में विहारों ने गुरुकुलों का स्थान लिया,विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई,नालंद,तक्षशिला,विक्रमशिला,वल्लभी विश्वविध्यालय आदि उच्च शिक्षा के और संस्कृति के केंद्र थे।देश के कोने-कोने से विद्यार्थी यहाँ पढने आया करते थे।उपनिषद को वेद का अन्तिम भाग होने के कारण वेदान्त भी कहते हैं यह 'उत्तिष्टत जाग्रत प्राप्य वरन्निबोधत'-ज्ञान के आलोक में सत्य के पथ पर चलने की प्रेरणा देता है।निरंतर स्वाध्याय से ही ज्ञान की सुंदर ,शुभ्र झरना झरती है।भारतीय विद्या शांति का उपासक है।

गुरु का स्थान:-वास्तव में अध्यापन कार्य एक 'मिशन' है। पुरे आस्था और निष्टा से यह कार्य करना है। अध्यापकों का प्रेम तीन चीजों पर होनी चाहिए-विषय,विद्यार्ति और विद्यालय।यह त्रिवेणी ही आचार्य का द्येय होना चाहिए।

वैश्विक स्थर पर शिक्षा पद्दती:-

आज भौगोलीकरण में शिक्षा के साधान और गुरु की परिभाषा में कुछ सही -कुछ गलत परिवर्तन हुए हैं।

सही और अच्छे पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता:-एक आदर्श ,सफल शिक्षा व्यवस्था में पाठ्य पुस्तकें जरूरी संसाधन है। भारत में आज के वैश्विक दौर में अधिकांश अध्यापक और विद्यार्थी इन पुस्तकों के आधार पर ही निर्भर है।

"अगर भारत को विश्व शक्ति बनना चाहता है तो हमें शिक्षा प्रणाली को विश्व स्तर का बनाकर खुद को इसके लायक साबित करना होगा।"-राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी।

निष्कर्ष:-

शिक्षा के संकट को समाप्त करने के लिए उपराष्ट्रपति श्री वैकेंय्य नायडू ने भारत को ज्ञान एवं नवाचार का एक अग्रणी केन्द्र बनाने और व्यापक बदलाव लाने का आह्वान किया।भारत " विश्वगुरु" के पद पर एक बार फिर शिक्षण के वैश्विक केन्द्र के रूप में उभर कर आने के प्रयत्नशील है। शिक्षण को हम इन तीन स्तरों में बांट कर इस पर कार्य करना है-स्मृति,बोध,चिंतन।आज की युवा पीढी को गुणात्मक,नवाचार युक्त,कौशल्युक्त शिक्षा प्रदान करने में सफल हो ताकि वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए कुशल मानव संसाधान तैयार किया जा सके,इससे नवाचार के माध्यम से उत्कृष्टता हासिल करें । आज कई प्रयत्नों के बाद नवविचार,शोधपरक,अनुसंधान को बढावा दे रही है।४५,००० सेअधिक महाविद्यालयों के गुणवत्ता में सुधार हो रहा है।शिक्षाविदों,उद्योग जगत के साथ पाठ्यक्रम का विकास कर रहे हैं।शैक्षित डिजाइन और वितरण में विश्व के अन्य पठ्यक्रम के साथ जोडा जा रहा है।

शिक्षा के संकट को समाप्त करने के लिए सभी देशों में यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक बच्चे को,विद्यार्थी को शिक्षा समाप्ति तक सही,प्रेरणादायी शिक्षक,समय के अनुरूप पाठ्यक्रम,सफल नीतियाँ,कार्यशालायें अन्य देशों की कार्य नीतियाँ,उत्तम शैक्षणिक पर्यावरण को उपलब्ध कराना और उस पर सही समय-समय पर सुधार लाना अति आवश्यक है।अंतराष्ट्रीय रूप से सहमत मानकों को शिक्षक शिक्षा कार्यक्रोमों के लिए कार्यक्रम बानाते रहेना आवश्यक है। वास्तव में आज समाज भोगवादी बन गया है। शिक्षा मर्केट का या बाजार क स्वरूप बन गया है।पहले इस दृष्टिकोण से बाहार आना उत्तम दिशा पर चलना आध्य कर्तव्य है।समाज चलता है मूल्यों पर। सच्चाई,कृतज्ञता,ईमानदारी,भाईचारा,कर्तव्यनिष्टा,प्रेम, विश्वास,सेवाभाव,शील,राष्ट्रभक्ति,मानवता,आदी मूल संस्कारों से मजबूत बनानेवाला शिक्षा का कर्तव्य होना

अनिवार्य है। विश्वास है आगे इस तरह के सोच और कार्यक्रमों के माध्यम से कुछ परिवर्तन हो और हमार प्रयास भी सफल हो।

भारतीय शिक्षा एवं साहित्य: वैश्विक संदर्भ में

भूमिका:-

- शिक्षा व्यक्ति से समाज को और समाज से राष्ट को हर तरह से शक्ति प्रदान करती है।
- शिक्षा मनुष्य को मानव से मनुष्य और मनुष्य से देवता बनाती है।
- साहित्य मानव मुक्ति का साधन है।
- भारत का साहित्य एक है।
- भारत का साहित्य एक है,यद्यपि यह बहुत सी भाषाओं में लिखा जाता है।-डां.एस.राधाकृष्णन।
- काव्य और कथा का रूप एक ही है।
- भारतीय भाषाएं और साहित्य एक ही वृक्ष की शाखाएं हैं।
- ज्ञान मनुष्य को दृष्टि देती है और संस्कृति उसको सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है।
- संस्कृत संस्कार की और संस्कृति की भाषा है।

शिक्षा और साहित्य प्राचीन तथा समकालीन स्पृणीय मूल्यों का संवाहक है।वास्तव में शिक्षा और साहित्य में परस्पर गहरा संबंध है।माध्यम भाषा हैं।भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है।भाषा शिक्षा के लिए अनिवार्य है और इसके बिना साहित्य संभव नहीं है,ज्ञान की वृद्दि भी भाषा के बिना अकल्पनीय है। भाषा के माध्यम से ही मूल्यों का संवर्धन और संक्रमण कर सकते हैं।

भाषा अभिव्यक्ति का प्रबल माध्यम है।

प्राकृत भाषाएं संस्कृत की ही कन्याएं हैं। तमिल,मलयालम,कन्नड और तेलुगु ये द्रविड भाषाएं मानी जाती हैं फिर भी उनके विकास में संस्कृत का बडा योगदान है।मराठी,गुजराती,पंजाबी,बांग्ला,हिंदी आदी भाषाएं संस्कृत से ही पल्लवित हुई है। हिन्दी अन्य आधुनिक भाषाओं की तरह प्रादेशिक होते हुए भी राष्टीय है और हमारी राष्टवाणी भी है।हिन्दी भाषा का भविष्य उज्वल है,उसे इंग्लिश,फ्रेंच,जर्मन,रूसी और चीनी भाषा के समान अंतरराष्टीय दर्जा भी मिला है।इस देश की सांस्कृतिक एकता और राष्टीयता प्राचीन काल सेआज तक निरंतर कायम रखने में भारतीय भाषाओं का सार्थक प्रयास जारी है। भाषा बहती है इसलिए बदलती है।इतिहास कब और किस प्रकार से नया मोड लेगा इसे सुनिश्चित रूप से कहना मुश्किल है।

मनुष्य ने अपने अनुभवों, भावनाओं और मूल्यों के आधार पर संस्कृति का नुर्माण किया है। भारतीय संस्कृती की जडें संस्कृत भाषा और साहित्य में हैं।पं.जवाहरलाल नेहरू ने संस्कृति की व्याख्या इस प्रकार करते हैं कि : संस्कृत ने ही भारतीय संस्कृति को जन्म दिया है। मानव का इतिहास ही उसकी सभ्यता और संस्कृति की कहानी है। इस देश की सांस्कृतिक विरासत वेदों,उपनिषदों,गीता,रामायण,महाभारत,संत साहित्य आदि स्रोतों से आती है। हमारी पौराणिक कथाएं एक हैं मिथक एक हैं,देवता भी एक ही हैं।राम,कृष्ण,बुद्ध,महावीर,अशोक,शिवाजी,गांधी अन्य कई हमारे महापुरुष है। हमारी लोक कथा,लोकगीत एक है। हमारी प्रेरणाएं एक है। समस्त भारत के संत समुदाय के गीत,काव्यों में इस देश की आत्मा का प्रकटीकरण हो चुका है। हमारे मूल्य एक है।संस्कृति ने ही हमारी भाषाओं और साहित्य में भावनात्मक एकता का निर्माण करती है।

भारत की शिक्षा पद्दती:-

भारतीय शिक्षा पद्दती संसार में सबसे प्राचीन पद्दती है।भारत में शिक्षा गुरुकुल में हुआ करता था,जो आज का रेसिडेंशियल या आवासी विद्यालय की तरह जिसे राजाश्र भी प्राप्त था।गुरुकुल शिक्षा पद्दति में आचार्य और छात्र गुरुमाता उस परिवार के प्रमुख सदस्य होते हैं। वह वैदिक शिक्षा पद्दति है,वेदों के अध्ययन पर आधारित है। परा और अपरा विद्या का अध्ययन-अध्यापन प्राचीन गुरुकुलों में होता था।विद्या परा हो या अपरा वह पवित्र होता है।वेदों में शाश्वत और सार्वभौम है।वेद का अर्थ ही ज्ञान है। आध्यात्मिक और भौतिक जीवन का सुंदर संगम गुरुकुल पद्दति में था। शिक्षा का माध्यम संस्कृत था। गणित,व्याकरण,खगोल,न्याय,काव्य-

विषय,धर्म,अर्थ,काम और मोक्ष,पुरुषार्थ (ब्रह्मचर्य,गृहस्त,वानप्रस्त और सन्यासाश्रम) इन विषयों पर विशेष रूप से अध्ययन किया जाता था। गुरू सर्वज्ञ माना जाता था।

गुरुकुल पद्दति क्रमश: खंडित हो गई ,बौद्दकाल में विहारों ने गुरुकुलों का स्थान लिया,विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई,नालंद,तक्षशिला,विक्रमशिला,वल्लभी विश्वविध्यालय आदि उच्च शिक्षा के और संस्कृति के केंद्र

थे।देश के कोने-कोने से विद्यार्थी यहाँ पढने आया करते थे।उपनिषद को वेद का अन्तिम भाग होने के कारण वेदान्त भी कहते हैं यह 'उत्तिष्टत जाग्रत प्राप्य वरन्निबोधत'-ज्ञान के आलोक में सत्य के पथ पर चलने की प्रेरणा देता है।निरंतर स्वाध्याय से ही ज्ञान की सुंदर ,शुभ्र झरना झरती है।भारतीय विद्या शांति का उपासक है।

गुरु का स्थान:-वास्तव में अध्यापन कार्य एक 'मिशन' है। पुरे आस्था और निष्टा से यह कार्य करना है। अध्यापकों का प्रेम तीन चीजों पर होनी चाहिए-विषय,विद्यार्थी और विद्यालय।यह त्रिवेणी ही आचार्य का ध्येय होना चाहिए।

वैश्विक स्थर पर शिक्षा पद्दती:-

आज भौगोलीकरण में शिक्षा के साधान और गुरु की परिभाषा में कुछ सही -कुछ गलत परिवर्तन हुए हैं।

सही और अच्छे पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता:-एक आदर्श ,सफल शिक्षा व्यवस्था में पाठ्य पुस्तकें जरूरी संसाधन है। भारत में आज के वैश्विक दौर में अधिकांश अध्यापक और विद्यार्थी इन पुस्तकों के आधार पर ही निर्भर है।

"अगर भारत को विश्व शक्ति बनना चाहता है तो हमें शिक्षा प्रणाली को विश्व स्तर का बनाकर खुद को इसके लायक साबित करना होगा।"-राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी।

निष्कर्ष:-

शिक्षा के संकट को समाप्त करने के लिए उपराष्ट्रपति श्री वैकेंया नायडू ने भारत को ज्ञान एवं नवाचार का एक अग्रणी केन्द्र बनाने और व्यापक बदलाव लाने का आह्वान किया।भारत " विश्वगुरु" के पद पर एक बार फिर शिक्षण के वैश्विक केन्द्र के रूप में उभर कर आने के प्रयत्नशील है। शिक्षण को हम इन तीन स्तरों में बांट कर इस पर कार्य करना है-स्मृति,बोध,चिंतन।आज की युवा पीढी को गुणात्मक,नवाचार युक्त,कौशल्युक्त शिक्षा प्रदान करने में सफल हो ताकि वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए कुशल मानव संसाधान तैयार किया जा सके,इससे नवाचार के माध्यम से उत्कृष्टता हासिल करें । आज कई प्रयत्नों के बाद नवविचार,शोधपरक,अनुसंधान को बढावा दे रही है।४५,००० सेअधिक महाविद्यालयों के गुणवत्ता में सुधार हो रहा है।शिक्षाविदों,उद्योग जगत के साथ पाठ्यक्रम का विकास कर रहे हैं।शैक्षित डिजाइन और वितरण में विश्व के अन्य पठ्यक्रम के साथ जोडा जा रहा है।

शिक्षा के संकट को समाप्त करने के लिए सभी देशों में यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक बच्चे को,विद्यार्थी को शिक्षा समाप्ति तक सही,प्रेरणादायी शिक्षक,समय के अनुरूप पाठ्यक्रम,सफल नीतियाँ,कार्यशालायें अन्य देशों की कार्य नीतियाँ,उत्तम शैक्षणिक पर्यावरण को उपलब्ध कराना और उस पर सही समय-समय पर सुधार लाना अति आवश्यक है।अंतराष्ट्रीय रूप से सहमत मानकों को शिक्षक शिक्षा कार्यक्रोमों के लिए कार्यक्रम बानाते रहेना आवश्यक है। वास्तव में आज समाज भोगवादी बन गया है। शिक्षा मर्केट का या बाजार क स्वरूप ले लिया है।पहले इस दृष्टिकोण से बाहार आना उत्तम दिशा पर चलना आध्य कर्तव्य है।समाज चलता है मूल्यों पर।

सच्चाई,कृतज्ञता,ईमानदारी,भाईचारा,कर्तव्यनिष्टा,प्रेम, विश्वास,सेवाभाव,शील,राष्ट्रभक्ति,मानवता,आदी मूल संस्कारों से मजबूत बनानेवाला शिक्षा का कर्तव्य होना अनिवार्य है। विश्वास है आगे इस तरह के सोच और कार्यक्रमों के माध्यम से कुछ परिवर्तन हो और हमार प्रयास भी सफल हो।

आधार ग्रन्थ:-१.भारतीयता के सामासिक अर्थ-संदर्भ-अम्बिकादत्त शर्मा।

२.साहित्यालोचन-श्यामसुंदरदास।

३.शिक्षा साहित्य और मानवीय मूल्य-डा.जनार्दन वाधमारे।